بسم الله الرحمن الرحيم

जुम्मा खुतुबा

विषय:-

" आर्थिक बलिदान (भाग 2)"

हज़रत मुहीउद्दीन अल ख़लीफ़तुल्लाह मुनीर अहमद अज़ीम (अ स)

06 April 2018 (18 Rajab 1439 AH)

अनुवादक : फातिमा जास्मिन सलीम
EMAIL:fjasmine14@gmail.com

अपने सभी चेलों सहित सभी नए चेलों , (और दुनिया भर के सभी मुसलमानों) को शांति का अभिवादन करने के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल्लाह (अ त ब अ) ने तशहुद ,तौज, सूरह अल फातिहा पढ़ा और फिर उन्होंने अपना उपदेश दिया : **"आर्थिक बलिदान (भाग २)"**

अल्हम्दुलिल्लाह, सुम्मा अल्हम्दुलिल्लाह, मैं उसी विषय को जारी रखता हूं जो मैंने आर्थिक बलिदान पर पिछले शुक्रवार को शुरू किया था।

तो जैसा कि मैंने पिछले हफ्ते कहा था, मनुष्य और सभी विश्वासियों की सभी आर्थिक और अन्य समस्याओं का समाधान, अल्लाह के रास्ते में खर्च करने (अल्लाह सर्वशक्तिमान) में पाया जाता है।यह गरीबी और सभी प्रकार की कठिनाइयों और समस्या पर काबू पाने का उपाय है।

विश्वास, गरीबी पर काबू पाने का एक और उपाय है। ज़कात और भुगतान करने के परिणामस्वरूप अन्य आर्थिक योगदान एक व्यक्ति के विश्वास को बढ़ाता है और वह परमेश्वर के आनंद को जीतता है। अल्लाह कभी भी उन लोगों को नज़र अंदाज़ नहीं करता, जो उसके लिए बलिदान करते हैं। वह कभी उनकी जरूरतों से उन्हें वंचित नहीं करता। प्रत्येक व्यक्ति को अल्लाह या दुनिया का याचक बनना पड़ता है। यह बेहतर है की हम अल्लाह के याचक बने। उसमें सच्चा ज्ञान निहित है।

हमेशा यह समझना चाहिए कि अल्लाह का याचक बनने से एक व्यक्ति ईश्वर के आंनद को जीतता है। यह वास्तविकता में सुस्थित है। इसमें तो कोई शक ही नहीं है। कुछ लोग गलतफहमी के कारण वश शिकायत करते हैं कि जमात उल साहिह अल इस्लाम आर्थिक बलिदान करने के लिए अपने सदस्यों की ज़रूरतों पर निरंतर संश्रय करता है और अन्य आवश्यक ज़रूरतों पर ध्यान नहीं देता है। यह जमात के अधिकारियों का नहीं है, लेकिन यह स्वयं अल्लाह है, जो पवित्र कुरान में समझाता है की निष्ठावान लोग आर्थिक बलिदान करें। अधिकारी केवल अल्लाह के परमार्श की व्याख्या कर रहे हैं, अतः, उन पर कोई दोष नहीं है। अल्लाह के रास्ते में देना, वास्तव में, सभी के, स्वयं के आध्यात्मिक और भौतिक लाभ के लिए है।

आर्थिक योगदान देने से ईमानदारी विकसित होती है और आत्मा की शुद्धि होती है; यह तक़वा के अधिग्रहण में मदद करता है (श्रद्धामय से अल्लाह का डर, धार्मिकता, धर्मनिष्ठा)। वास्तव में, तक़वा इसके माध्यम से व्यक्त हुआ है। व्यक्ति का दृष्टिकोण बदल जाता है और वह अल्लाह के आनंद और आशीर्वाद को आकर्षित करता है और भले ही उसके पास दोष हो और कमजोरियों के कारण उनका योगदान बेकार नहीं जाएगा। अल्लाह, उनकी कृपा से भी बाहर, उनके दोषों को अनदेखी करता है और उसकी बेहतरी के लिए बदलने में उसकी मदद करता है। अल्लाह बड़ा है, दयालु है और माता-पिता की तुलना में बहुत अधिक सक्षम प्रेम करने वाला है। अपने प्रिय सेवकों की रक्षा करने में, वह अधिक

सुरक्षात्मक और प्रचण्ड है। हम पवित्र कुरान से सीखते हैं कि वह उनके प्यारे नौकरों के दोषों को अनदेखी करता है। मुझे पता है कि जो अल्लाह के खातिर आर्थिक बलिदान करते है,वह उन लोगों के दोषों को नजर अंदाज करता हैं। वे धर्मनिष्ठता से विकसित होते हैं।अगर एक माँ के बच्चे धर्म के लिए कोई पैसा नहीं खर्च करते है तो एक धर्मपरायण माँ खुश नहीं होगी। वह यह विचार नहीं करती कि यह उन पर बोझ होगा। वह चाहती है कि वे इस आशीर्वाद में भाग लें।

मैं कुछ बच्चों के माता-पिता को जानता हूं जो अपने बच्चों को अल्लाह के रास्ते में खर्च करने से रोकते है जिसने अभी-अभी कमाना शुरू किया है, इस आधार पर की वे जीवन में ठीक से बसा नहीं हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो इस खर्च को व्यर्थ व्यय के रूप में देखते हैं (अल्लाह वर्जित करे)।

दूसरे ओर अन्य माता-पिता हैं जो उनके योगदान के परिणामस्वरूप प्राप्त हुए हैं उस आशीर्वाद के लिए आभारी हैं और उनके बच्चों को भी अल्लाह के आशीर्वाद से वंचित नहीं करना चाहते हैं। इसलिए वे उनसे योगदान करने का आग्रह करते हैं।

कुछ बच्चे अपने माता-पिता द्वारा अच्छी तरह से प्रशिक्षित होते हैं, जो अल्लाह के रास्ते में दे रहे तत्त्वज्ञान के दर्शन को पूरी तरह से समझते हैं। कुछ युवा, अल्हमदुलिल्लाह, अपनी कमाई मुझे परमेश्वर की सेवा में इस्तेमाल करने के लिए भेजते हैं, जबकि अन्य, जो सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेते थे, उन्होंने इस प्रथा को खत्म कर दिया है। उन्हें इससे सावधान रहना चाहिए, नहीं तो यह उनके लिए अभिशाप बन जायेगा। **याद रखें !** अल्लाह के रास्ते में खर्च करना आस्तिक के लिए सबसे अधिक चतुर निवेश है। **अल्लाह कभी आपको खाली हाथ नहीं छोड़ेगा !** जब आप उसे याद करते हैं और उसके रास्ते में खर्च करना पसंद करते हैं, आपके पास जो भी क्षमता है उसमे से उसके कार्य में मदद कर रहें है और आपके पास जो भी साधन हैं, अल्लाह आप सभी को उसे वापस लौटा देगा और इस दुनिया में और उसके बाद भी, दोनों में, वह आपके निवेश को दुगना कर देगा। लेकिन, अल्लाह की दया और उदारता को और सभी लोग जीवन के इस महत्वपूर्ण उदाहरण को नहीं समझते हैं ।

माता-पिता को उनकी मदद करने के इरादे से अपने बच्चों को समर्थन देना चाहिए। माता-पिता जो अपने बच्चों को अल्लाह के रास्ते में खर्च करने से रोकते हैं,अल्लाह की दुआओं से महरूम रहेंगें। जबकि उनके बच्चे अल्लाह के कार्य की सेवा करने में हमेशा तैयार रहते हैं, ऐसे माता-पिता जो उन्हें सलाह दें, अन्यथा, परमेश्वर के मार्ग में उनके धन को **'बर्बाद'** करने से हतोत्साहित करना, वास्तव में बुरा है। वास्तव में, अल्लाह पवित्र कुरान में ,अल्लाह को अधिमान देने और उसकी आज्ञाओं का पहले पालन का उपदेश दिया है, फिर उसके बाद में माता-पिता और उनकी इच्छाएँ आती हैं। अब अगर माता-पिता अपने बच्चों को ईश्वरीय आदेशों का सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जैसे कि सही मायने में उदार माता-पिता, अल्लाह की प्रशंसा, प्यार और आशीर्वाद के योग्य हैं। लेकिन अगर

माता-पिता अल्लाह की आज्ञाओं की अवहेलना करते हैं, और अपने बच्चों को पूरी तरह से अल्लाह के बन्दे के रूप में बनने से बाधा डालते हैं, जबकि बच्चों को हमेशा उनका सम्मान करने को कहते है और

उनकी परवाह करने को कहते है, लेकिन उनके विश्वास के संबंध में, उन्हें अपने माता-पिता के गलत शिक्षाओं का त्याग करना चाहिए और अल्लाह की सदाबहार शिक्षाओं को अभ्यास में लाना चाहिए।

ऐसे कई मामले मेरे ध्यान में आए हैं, जहाँ बच्चे खुद को एक अनिश्चित स्थिति में पाते हैं जब उनके अपने माता-पिता उन्हें अल्लाह के मार्ग में खर्च करने से रोकते हैं और अल्लाह की कृपा से मैं अल्लाह के दूत के रूप में इन मामलों को सौहार्दपूर्वक क्षमता से निपटाने में सक्षम था, जिसका अर्थ है कि अल्लाह ने मुझे एक विश्वव्यापी परिवार के मुखिया के रूप में रखा है जिसके साथ लोग बिना किसी डर के, अनौपचारिक रूप से व्यक्तिगत मामलों पर चर्चा करते हैं।

इस महत्वपूर्ण प्रश्न के संबंध में मेरा ध्यान कुरान की इस आयत के निम्नलिखित बातों पर खींचा:

अपनी संतानों को निर्धनता के भय से वध न करो। **(अल-अनाम ६ : १५२)।**

इस छंद में आम तौर पर और सही ढंग से व्याख्या की गई है जिसका अर्थ है कि किसी को भी किसी के बच्चों की देखभाल करने में असमर्थ होने या उसके डर से या राष्ट्रीय आर्थिक कारण से जन्म नियंत्रण का अभ्यास नहीं करना चाहिए । वह छंद आम तौर पर इसी विषय पर लागू होती है। लेकिन इसका अर्थ यह भी समझा जा सकता है कि आध्यात्मिक रूप से आप अपने हाथों से अपने बच्चों को मार रहे होंगे, अगर आप उन्हें अल्लाह के रास्ते में आर्थिक योगदान देने से रोकते हैं।

यह जरूरी है कि जमात उल साहिह अल इस्लाम के सदस्यों को लगातार लाभकारी आशीर्वादों के बारे में समझने के लिए याद दिलाया और निर्देशित किया जाता रहें, अल्लाह को देने से जो हमारे दिलों की हालात को जानता है। हमें पूर्ण जागरूकता, विनम्रता और वास्तविक भावना के साथ देना चाहिए। यह वह रूह है जिसे अल्लाह (स व त) प्यार करता है और जिसे शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है। कभी कोई एक व्यक्ति को कुछ देता है, ताकि एक ज़िद्दी बच्चे को सिर्फ शांत रखने के लिए या एक व्यक्ति से छुटकारा मिल सके। इसी तरह से, लोग कभी-कभी किसी भिखारी को कुछ दे देते हैं। इससे तो बेहतर होगा कि सच्ची और सुखद भावनाओं के साथ दे, जो दिल को पिघला दे, आपकी मानवता जागृत करने के साथ और इस दुनिया में एक अस्थायी यात्री होने के बारे में जागरूकता, और यह अगला निवास है जो शाश्वत होगा। यदि आप इस जागरूकता के साथ रहते हैं, और सभी अच्छा काम अल्लाह के लिए समर्पित करते हैं, तो अल्लाह सर्वशक्तिमान को फिर से दिखाना होगा और

आपको उसकी भव्यता और दयालुता को भी दिखाना होगा। आपको हमेशा आपके निर्माता द्वारा प्यार और पोषित किया जाएगा, जो न केवल आकाश और पृथ्वी का निर्माता है ,बल्कि आपका निर्माता है, वह जो हमेशा तुम्हारे लिए होगा, तब भी जब सब कुछ समाप्त हो जाएगा।

इसलिए, यदि हमारे जमात के सदस्य इस भावना के साथ, और पूरे इस्लामी समुदाय - एक शरीर के साथ एक रूह (इस्लाम का शरीर - पवित्र रूह के साथ छुआ हुआ - और उसके सभी सदस्यों का बलिदान) - छलांग और सीमा में समृद्ध होगा और इसकी प्रगति को कोई रोक नहीं सकेगा।

अल्लाह हमें ऐसा करने में सक्षम करे।

आमीन सुम्मा आमीन, या रब्बुल आलमीन।